हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17-HL-**HL8**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	*अधिकतम अंक: 250* *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Pradeep Kumar Dwivedi

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 08 08/10/2017

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]: 0 0 2 1 3 7 9

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **Five** questions.*

*Candidate has to attempt all **FIVE** questions.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

बहुत अच्छा

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 143 टिप्पणी (Remarks):

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजियेः $10 \times 5 = 50$

(क) सतगुरु की महिमा अनँत, अनँत किया उपगार।
लोचन अनँत उघारिया, अनँत दिखावनहार।।

संदर्भ: प्रस्तुत पद्यखण्ड डा॰ श्यामसुन्दर दास द्वारा संकलित और कबीर द्वारा रचित 'कबीर ग्रंथावली' के 'गुरूदेव को अंग' से उद्धृत है। कबीर यहाँ मोक्ष की प्राप्ति के मार्ग में गुरु के महत्व को स्थापित कररहे हैं।

व्याख्या: कबीर कहते हैं कि सतगुरु की महिमा अतुल्य है, अनन्त है, उनके महत्व की कोई सीमा नहीं। सतगुरु के उपकार भी मुझ पर अनन्त हैं; उन्होंने मेरी आँखों पर पड़े अज्ञान व मोह के पर्दे को हटाकर, अनन्त अर्थात ब्रह्म (ईश्वर) के साक्षात्कार करने में मेरी सहायता की है। ~~इस्का तात्पर्य है कि~~

भावसौन्दर्य: 1. नाथपंथ व वैष्णव वेदान्त से प्रभावित होने के कारण कबीर की साधना प्रक्रिया में 'गुरु' का विशेष महत्व है।

2. सतगुरु के प्रति कृतज्ञता में दैन्य व 'विनय' का भाव भी दिखता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

शिल्प सौन्दर्य

1. अनंत शब्द की आवृत्ति तथा अलग-2 स्थानों पर अलग - अलग अर्थ से 'यमक' की छटा बिखरी है

3. कबीर की भाषा पंचमेली खिचड़ी है। जो कई बोलियों का मिश्रित स्वरूप है।

अच्छा

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) काहे को रोकत मारग सूधो?
सुनहु मधुप! निर्गुन-कंटक तें राजपंथ क्यो रुँधो?
कै तुम सिखै पठाए कुब्जा, कै कही स्यामघन जू धौं।
बेद पुरान स्मृति सब ढूँढ़ौ, जुवतिन जोग कहूं धौं?
ताको कहा परेखो कीजै जानत छाछ न दूधो।
सूर मूर अक्रूर गए लै ब्याज निबेरत उधो।।

संदर्भ: प्रस्तुत काव्यांश 'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल' द्वारा संकलित और 'सूर' द्वारा रचित 'भ्रमरगीत सार' से उद्धृत है। यहाँ गोपियाँ उद्धव से वाग्विदग्ध शैली में ~~का~~ व्यंग्यपूर्ण प्रश्न पूछ रही हैं।

व्याख्या: उद्धव द्वारा लगातार गोपियों को निर्गुण मार्ग पर प्रेरित किये जाने से परेशान गोपियाँ अन्ततः खीझकर ~~पूछती हैं कि~~ भ्रमर पर उपालम्भ करती हैं और कहती हैं कि हे मधुप क्यों सगुण भक्ति के सीधे मार्ग को अवरुद्ध कर रहे हो? ~~क्या~~ क्या तुम्हें कुब्जा ने ऐसा करने को कहा है या स्वयं श्रीकृष्ण ने? तुमने वेद-पुराण स्मृति सभी का अध्ययन किया है, कहीं यह पाया क्या कि युवतियों को योग रास आता हो? गोपियाँ व्यंग्य करते हुए ~~क~~ स्वयं से कहती हैं कि

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ऐसे व्यक्ति से क्या अपेक्षा करना जिसे खाद्य और दूध में अंतर नहीं पता। अंत में सूर गोपियों से कहलवाते हैं कि अक्रूर तो मूलधन रुपी कृष्ण को ले गए अब यहाँ उद्धव ब्याज वसूलने आए हैं।

विशेष:

भाव: 1. गोपियों की वाणी भावातिरेक के कारण तिक्त होने लगी है।

2. कुब्जा के प्रति असूया भाव की छटा प्रदर्शित हुई है।

3. सगुण कृष्णभक्ति की स्थापना का अप्रतिम प्रयास

शिल्प: 1. निर्गुन- कंटक तथा 'मूर' में रूपक की व्यंजना की गई है

2. वाग्विदग्धता शैली के साथ व्यंग्यात्मकता चरम पर है।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन में करत हैं, नैननु ही सों बात।।

संदर्भ: प्रस्तुत काव्यांश रीतिसिद्ध काव्य के पुरोधा कवि 'बिहारीलाल' की रचना बिहारी सतसई से उद्धृत है। यहां बिहारी नायक एवं नायिका के द्वारा किसी सभा के बीच की जा रही प्रेम क्रीड़ाओं को श्रृंगारपूर्ण ढंग से व्यंजित कर रहे हैं।

व्याख्या: नायिका और नायक के बीच आँखों ही आँखों में प्रेमालाप चल रहा है। नायक कुछ कहता है नायिका नाटक-सा करती है व नायिका की अदाओं पर नायक मोहित होने लगता है। इस बात पर नायिका ~~प्रेम~~ प्रेमपूर्ण रोष व्यक्त करती है। दोनों मिलते हैं, हँसते हैं लजाते हैं और ऐसे ही आँखों ही आँखों में बीच सभा में प्रेम प्रदर्शन हो रहा है।

विशेष: 1. बिहारी श्रृंगार रस के श्रेष्ठतम कवि माने जाते हैं जिसकी सर्वोच्च अवस्था इस दोहे में है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2. बिहारी की 'समास क्षमता' व 'अनुभाव योजना' का अप्रतिम उदाहरण

3. (क) अंतिम वर्ण के रूप में 'त' की आवृत्ति से 'अनुप्रास' की छटा बिखरी है।

4. ब्रजभाषा का परिष्कृत रूप बिहारी ने यहाँ प्रदर्शित किया है।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) भू-लोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला-स्थल कहाँ?
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल जहाँ।
सम्पूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है?
उसका कि जो ऋषिभूमि है, वह कौन? भारतवर्ष है।।

प्रसंग: प्रस्तुत काव्यांश राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के उद्‌बोधन काव्य 'भारत-भारती' के 'अतीतखंड' से लिया गया है। यहाँ गुप्त जी भारत के अतीत का गौरवशाली वर्णन करते दिख रहे हैं।

व्याख्या: गुप्त जी प्रश्न करते हैं कि समस्त धरा का गौरव तथा प्रकृति की लीला का पुण्य स्थल कहाँ है वहीं न जहाँ हिमालय जैसा मनोरम पर्वत और गंगा जैसी पवित्र नदियाँ पाई जाती हैं। ऐसा एक ही देश है जो सम्पूर्ण विश्व में सिरमौर है, वही ऋषिभूमि है- ऐसा देश कोई और नहीं भारतवर्ष ही है।

विशेष: 1. अतीत के गौरवपूर्ण वर्णन का प्रयोग आम जन के उद्‌बोधन के लिए किया गया है।
2. हजारी आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इन पंक्तियों को 'शिक्षित समाज की चेतना को बुभुक्षित होने से बचाने वाली कहा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. ऐसा ही भाव जयशंकर प्रसाद के ~~नाटक~~ नाटक चन्द्रगुप्त में कार्नेलिया के कथन में दिखता है -

" अरुण यह मधुमय देश हमारा
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता
एक सहारा "

4. अभिधात्मक ~~शब्दों~~ शब्दशक्ति का प्रयोग काव्य को जनसामान्य के लिए सुग्राह्य बनाता है।

5. अतीत के वर्णन के कारण भाषा 'तत्सम-प्रधान हो गई है।

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) है अमानिशा, उगलता गगन घन अंधकार
खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन चार,
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल
भू-धर ज्यों ध्यान-मग्न, केवल जलती मशाल।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संदर्भ: प्रस्तुत पद्यांश महाप्राण कवि सूर्यकान्त ~~निराला~~ त्रिपाठी 'निराला' के काव्य-संकलन 'राग विराग' में संकलित कविता 'राम की शक्ति पूजा' से उद्धृत है। यहाँ कवि युद्ध में अपेक्षित पराजय के कारण राम के दल में घोर नैराश्य का वर्णन प्रकृति को आलम्बन बनाकर कर रहा है।

व्याख्या: निराला लिखते हैं कि ~~अर्धरात्रि~~ रात्रि हो गई है, आकाश घना अंधकार उगल रहा है और इसी अंधकार के कारण दिशा ज्ञान बाधित हो रहा है। चारों पवन शान्त पड़ गई है। इसपर पीछे उपस्थित समुद्र गर्जना कर रहा है। ऐसी घनघोर निराशा में ~~केवल~~ प्रकाश स्रोत के रूप में केवल एक मशाल जल रही है।

~~अत~~
विशेष:
1. रात्रि व प्रकृति के व्यापक बिम्बों के प्रयोग से कवि नैराश्य की सघनता

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वर्णित कर रहा है

2. भाषा मुख्यत: तत्समबहुला है, परन्तु 'मिशाल' जैसे फारसी शब्द का ~~प्रयोग~~ प्रयोग भी अर्थ संप्रेषण को सघन बनाने के लिए किया गया है।

3. ① प्रतीकशैली का प्रयोग किया गया है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) पीछै लागा जाई था, लोक वेद के साथि,
आगे तैं सतगुर मिल्या, दीपक दीया हाथि।।

संदर्भ: प्रस्तुत पद्यांश कबीरदास कृत कबीर ग्रंथावली के 'गुरुदेव को अंग' से उद्धृत है। यहाँ कबीर ज्ञान की प्राप्ति व अवांछित भटकन से बचाने में गुरु के महत्व का वर्णन कर रहे हैं।

व्याख्या: कबीर कहते हैं कि मैं तो लोकव्याप्त अंधविश्वासों में पड़कर वेद-पुराण आदि के पीछे पड़ा हुआ था, परन्तु तभी मेरा मिलन मेरे गुरुदेव से हुआ जिन्होंने मुझे ज्ञान की रोशनी प्रदान करते हुए ब्रह्म का मार्ग बताया और मुझे सही मार्ग का ज्ञान हुआ।

विशेष: 1. 'नाथपंथ' व 'वैष्णव वेदान्त' से प्रभावित कबीर की साधना पद्धति में गुरु का विशेष स्थान है।

2. धार्मिक अंधविश्वासों का खण्डन किया गया है।

3. 'अवधी' शब्दों का प्रयोग जैसे हाथि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

4. भाषा में खड़ी बोली के प्रारम्भिक लक्षण भी दिखने लगे हैं।

अच्छा 6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) चढ़ा असाढ़ गँगन घन गाजा। साजा बिरह दुंद दल बाजा।
धूम स्याम धौरे घन धाए। सेत धुजा बगु पाँति देखाए।
खरग बीज चमकै चहुँ ओरा। बुंद बान बरिसै घन घोरा।
अद्रा लाग बीज भुइँ लेई। मोहि पिय बिनु को आदर देई।

संदर्भ: प्रस्तुत पद्यारवण्ड प्रेम की पीर के कवि 'मलिक मुहम्मद जायसी' के प्रसिद्ध ~~स्तम्भ~~ 'पद्मावत' के नागमती वियोग खण्ड से उद्धृत है। यहां वर्षा की ऋतुओं के प्रभाव से नागमती के विरह की सघनता को वर्णित किया गया है।

व्याख्या: नागमती कहती है कि आषाढ़ का महीना ~~पर्व~~ आ गया है। जिससे बादल गर्जना करने लगे हैं। परन्तु मेरे विरह का कोई अन्त नहीं। चारों तरफ खड्ग के समान ~~बि~~ प्रतीत होने वाली बिजली चमक रही है, ~~बु~~ बाणों के समान बूंदे पड़ रही हैं। आद्रा नक्षत्र भी आ गया, परन्तु मैं तो अनादृत ही हूँ। बिना पति के मेरा आदर कहाँ?

विशेष: 1. ~~ऋतु~~ 'बारहमासा' काव्यरूढ़ि के प्रयोग से कविता में लोक-जीवन प्रदर्शित हुआ है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2. जायसी की भाषा 'ठेठ अवधी' है इसलिए उन्हे 'अवधी का अरघान' कहा जाता है।

3. प्रकृति का वर्णन विरह को घनीभूत करने के प्रभाव में किया गया है।

विर

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जिसे तुम समझे हो अभिशाप, जंगत की ज्वालाओं का मूल-
ईश का वह रहस्य वरदान, कभी मत इसको जाओ भूल।
विषमता की पीड़ा से व्यस्त हो रहा स्पंदित विश्व महान,
यही दुख-सुख, विकास का सत्य यही भूमा का मधुमय दान।

संदर्भ: प्रस्तुत पद्यांश 'जयशंकर प्रसाद' के 'भावप्रधान महाकाव्य' 'कामायनी' के श्रद्धा सर्ग से उद्धृत है। यहाँ श्रद्धा मनु को ~~भक्ति~~ काम-भावना का महत्व समझा रही है।

व्याख्या: श्रद्धा कहती है कि जिस काम चेतना को तुम श्राप समझते हो, ~~श्राप~~ संसार के दुख का कारण समझते हो, वास्तव में वह ईश्वर का वरदान है जिसे हमें कभी नहीं भूलना चाहिए। इसी विषमता की पीड़ा का स्पंदन समस्त विश्व को महान बना रहा है। यही नारी-पुरुष की विषमता व काममयी सुख-दुख और सृष्टि के विकास का सत्य है, सृष्टि का अमूल्य दान है।

विशेष: 1. जयशंकर प्रसाद यहाँ 'कामाध्यात्मवाद' से प्रभावित होकर काम-भावना का महत्व बता रहे हैं,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2. 'विषमता की पीड़ा --' पंक्ति में आलोचकों ने मार्क्सवाद का प्रभाव देखा है।

3. दिनकर इसी भाव को कुरुक्षेत्र में भीष्म के माध्यम से प्रतिपादित करते हैं—
"न था मुझे विश्वास धर्म से स्नेह
श्रेष्ठ सुन्दर है
कोमलता की लौ, व्रत के आलोकों से बढ़कर
है"

4. भाषा: सुग्राह्य, तत्समबहुला

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) हरि हैं राजनीति पढ़ि आए।
समुझी बात कहत मधुकर जो? समाचार कछु पाए?
इक अति चतुर हुते पहिले ही, अरु करि नेह दिखाए।
जानी बुद्धि बड़ी, जुवतिन को जोग-सँदेस पठाए।।
भले लोग आगे के, सखि री ! परहित डोलत धाए।
वे अपने मन केरि पाइए जे हैं चलत चुराए।।
ते क्यों नीति करत आपुन जे औरनि रीति छुड़ाए?
राजधर्म सब भए सूर जहँ प्रजा न जायँ सताए।।

संदर्भ: प्रस्तुत पद्यांश आचार्य शुक्ल द्वारा संकलित और सूरदास कृत 'भ्रमरगीत सार' से उद्धृत है। यहाँ गोपियाँ उद्धव के निर्गुण व्याख्यान से परेशान हो कृष्ण व उद्धव पर ~~राजनीतिक~~ कुटिल व्यंग्य कर रही हैं।

व्याख्या: गोपियाँ कहती हैं कि कृष्ण मथुरा जाकर राजनीति में पारंगत हो गए हैं। एक तो पहले ही वे चतुर थे, ऊपर से स्नेह दिखाकर सिद्ध कर दिया। कृष्ण की बुद्धि का मजाक उड़ाते हुए वे कहती हैं न जाने उन्हें कहाँ से सीख मिली कि युवतियों को कुरुचिपूर्ण योग का संदेश देना चाहिए। गोपियाँ कहती हैं कि इनसे तो पुराने लोग अच्छे थे जो दूसरे के हित में जीवन अर्पित कर देते थे

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उनसे नीति की (न्याय की) उम्मीद क्या करना जो दूसरों के साथ अन्याय करते हैं। राजधर्म तो वही है जहाँ प्रजा को कोई कष्ट न हो।

विशेष: 1. गोपियों ने कृष्ण के माध्यम से 'राजनीति' के स्वरूप पर टिप्पणी दिखाई है, जो दूर की राजनीतिक चेतना से जुड़ती है।

2. वाग्विदग्ध, ~~भावपूर्ण~~ आवृत्ति वक्रोक्तिविधान युक्त व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग

3. 'निर्गुण भक्ति' का नकार व सगुण भक्ति की स्थापना का भाव

4. उपालम्भ काव्य का अप्रतिम उदाहरण

5. ब्रज भाषा का सुन्दर, परिष्कृत प्रयोग।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) शत घूर्णावर्त, तरंग- भंग उठते पहाड़,
जल राशि-राशि जल पर चढ़ता खाता पछाड़,
तोड़ता बन्ध-प्रतिसंध धरा, हो स्फीत-वक्ष
दिग्विजय-अर्थ प्रतिपल समर्थ बढ़ता समक्ष।

प्रसंग: प्रस्तुत पद्यांश निराला के काव्य की प्रसिद्धि स्तम्भ 'राम की शक्तिपूजा' के हनुमान ऊर्ध्वगमन प्रसंग से लिया गया है यहां हनुमान के शक्ति को निगलने का प्रण करने व ऊर्ध्वगमन करने पर प्रकृति की प्रक्रिया दिखाई गई है।

व्याख्या: हनुमान के उठते ही पहाड़ों में तरंगे उठने लगी। जल में लहरें तेज हो गई और समुद्र के ऊपर पछाड़ें खाने लगीं। समुद्र अपनी सीमाएँ तोड़ने लगा। हनुमान का दिग्विजय समर्थ रूप भीमा (शक्ति) के समक्ष जाने हेतु प्रतिपल आगे बढ़ने लगा

विशेष: 1. वीररस से ओतप्रोत तत्सम प्रधान ~~भाषा~~ भाषा।
2. निराला ~~के~~ के ~~समास~~ खड़ी बोली में सामासिकता के प्रयोग का सर्वोच्च

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

स्वरूप यहाँ प्रदर्शित हुआ है।

3. कृत्तिवास रामायण की कथा में परिवर्तन करते हुए यहाँ हनुमान को शक्ति से अधिक शक्तिशाली दिखाया गया है जो निराला की 'वैष्णव भक्ति' को दर्शाता है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) नैना नीझर लाइया, रहट बहै निस जाम।
पपीहा ज्यूँ पिव पिव करौं, कब रु मिलहुगे राम।।

प्रसंग: प्रस्तुत पद्यांश कबीरदास कृत कबीर ग्रंथावली के 'विरह को अंग' से उद्धृत है। यहाँ कबीर ईश्वर के वियोग में अपनी दशा का वर्णन कर रहे हैं।

व्याख्या: कबीर कहते हैं कि नैनों से निर्झर रूपी (झरने जैसी) अश्रुधारा बह निकली है, जैसे रहट से निरन्तर पानी निकलता रहा है वैसा हाल मेरी आँखों का है। राम के वियोग में मेरा हृदय इतना उद्वेलित है कि पपीहे के समान 'पिय-पिय' करता रहता है। हे राम! आप मुझे कब मिलोगे?

विशेष: 1. विरह की मार्मिक व्यंजना पपीहे के रूपक के प्रयोग से हुई है।

2. कबीर ने राम का नाम तो रामानन्द से लिया, परन्तु उन्होंने राम को निर्गुण बना दिया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

3. ~~कबीर के~~ 'विरह के अंग' सम्पूर्ण भावातिरेक पूर्ण खण्ड है जो कबीर की अनुभूति-प्रधानता का उदाहरण है।

अच्छा

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) न्यायोचित सुख सुलभ नहीं
जब तक मानव-मानव को,
चैन कहाँ धरती पर, तब तक
शान्ति कहाँ इस भव को?
"जब तक मनुज-मनुज का यह
सुख-भाग नहीं सम होगा,
शमित न होगा कोलाहल,
संघर्ष नहीं कम होगा।

प्रसंग: प्रस्तुत काव्यांश राष्ट्रकवि व अग्निधारा के पुरोधा 'रामधारी सिंह दिनकर' की कविता 'कुरुक्षेत्र' से उद्धृत है। यहाँ कवि वास्तविक शांति स्थापना की स्थितियों पर विचार कर रहा है।

व्याख्या: कवि कहता है कि इस धरती पर तब तक सम्पूर्ण शान्ति नहीं आ सकती जब-तक न्याय सर्वजन सुलभ न हो जाए। जब तक न्याय व उससे उत्पन्न सुख पर एक वर्गविशेष का अधिकार रहेगा, शोषण जारी रहेगा और अशांति छाई रहेगी।
जब तक प्रत्येक व्यक्ति को उसका वाजिब हिस्सा नहीं मिल जाता, तब तक संघर्ष के कम होने का प्रश्न ही नहीं उठता।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष: 1. पंक्तियों में मार्क्सवाद के 'वितरणमूलक न्याय' के सिद्धान्त का स्पष्ट प्रतिपादन दिखता है।

2. भाषा तत्समता को धारण किये हुए है।

3. अभिधा शब्द-शक्ति के प्रयोग से कविता जन-जन तक पहुँचा सकने में सक्षम हुई है।

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) बिलग जनि मानहु, ऊधो प्यारे!
वह मथुरा काजर की कोठरि जे आवहिं ते कारे।।
तुम कारे, सुफलकसुत कारे, कारे मधुप भँवारे।
तिनके संग अधिक छबि उपजत, कमलनैन मनिआरे।।
मानहु नील माट तें काढ़े लै जमुना ज्यों पखारे।
ता गुन स्याम भई कालिंदी सूर स्याम गुन न्यारे।।

संदर्भ व प्रसंग : प्रस्तुत पद्यखण्ड सूरदास कृत 'भ्रमरगीत सार' से उद्धृत है। यहाँ गोपियाँ कृष्ण के वियोग व उद्धव के नीरस ज्ञान से व्यथित होकर मथुरा, व कृष्ण पर उपालम्भ कर रही हैं।

व्याख्या : गोपियाँ कहती हैं कि मथुरा में ही कुछ दोष है क्योंकि वहाँ से जो भी आता है, हमें कष्ट देकर ही जाता है। वहाँ के सभी लोगों के हृदय काले हैं, चाहे वे तुम हो, अक्रूर हों या श्रीकृष्ण हों। परन्तु कृष्ण का प्रेम इतना अनूठा है कि हमें वही भाता है। उन्हीं कमल समान नयनों में हमारा भी रमता है। कृष्ण का प्रभाव ऐसा है कि यमुना भी उनके प्रभाव से काली हो गई है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

विशेष : 1. उपालम्भ के माध्यम से नगरीय जीवन शैली पर व्यंग्य किया गया है।

2. विरह विप्रलंभ - श्रृंगार का अप्रतिम उदाहरण

3. ब्रज भाषा का सुन्दर, मनोहर रूप

मानव-स्वभाव का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण.

5 1/2 / 10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(घ) जौ रोऊं तौ बल घटै, हँसौं तौ राम रिसाइ।
मनंही मांहि बिसूरणां, ज्यूँ घुँण काठहि खाइ।।

संदर्भ व प्रसंग: प्रस्तुत पद्यांश प्र० श्याम सुन्दर दास द्वारा संकलित व कबीर द्वारा रचित कबीर ग्रंथावली से उद्धृत है। यहाँ कबीर ईश्वर के प्रेम में अपने द्वंद्व का वर्णन कर रहे हैं।

व्याख्या: कबीर ~~लिखते~~ कहते हैं कि प्रभु के विरह में यदि मैं रोता हूँ तो शरीर कमजोर होता है यदि शरीर कमजोर हो गया, तो फिर मैं प्रभु का स्मरण कैसे करूँगा, पुनः यदि हँसता हूँ तो ईश्वर रुष्ट हो सकते हैं क्योंकि तब वे मेरी भक्ति पर संदेह कर सकते हैं। इसलिए मैं मन ही मन उनके विरह में चिर हूँ, मेरी हालत वैसी ही है जैसे घुन लगे गेहूँ की होती है।

विशेष: 1. ज्यों घुन काठहि खाइ में उपमा अलंकार का सुन्दर प्रयोग

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

2. ईश्वर के विरह में भक्त की स्थिति का अत्यन्त मार्मिक चित्रण

3. ध्यातव्य हो कि कबीर के यहाँ 'राम' सगुण नहीं हैं; निर्गुण हैं। वे स्वयं कहते हैं - 'निरगुन राम जपहु रे भाई'

4. कबीर की भाषा पँचमेली खिचड़ी है जो ~~ब्र~~ ब्रज, अवधी, खड़ी बोली व अन्य भाषाओं के मिश्रण से बनी है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) श्रेय नहीं कुछ मेरा,
मैं तो डूब गया था स्वयं शून्य में–
वीणा के माध्यम से अपने को मैंने,
सब-कुछ को सौंप दिया था–
सुना आप ने जो वह मेरा नहीं,
न वीणा का था:
वह तो सब-कुछ की तथता थी
महाशून्य
वह महामौन
अविभाज्य, अनाप्त, अद्रवित, अप्रमेय
जो शब्दहीन
सब में गाता है।

संदर्भ व प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश प्रयोगवाद के प्रणेता अज्ञेय की कविता 'असाध्यवीणा' से उद्धृत है। यहाँ प्रियंवद वीणा के स्वर सधने की प्रक्रिया में 'आत्मनिवेदन' के ~~[illegible]~~ के भाव का महत्व बता रहा है।

व्याख्या : प्रियंवद कहता है कि वीणा से स्वर निकलने की प्रक्रिया में मेरी कोई भूमिका नहीं है। मैंने तो बस स्वयं को सृजन-शक्ति को सम्पूर्ण अहंकार रहित भाव से सौंप दिया था।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आपने जो सुना उसमें न तो मैंने कुछ किया, न ही वीणा ने, वह तो उस परमशक्ति की कृपा ही थी। वही परमशक्ति जो महाशून्य है, महामौन होते हुए भी समस्त स्वरों को तिरोहित किये हुए है। वह शब्दहीन है पर सब में उसी का आविर्भाव होता है।

विशेष: 1. असाध्यवीणा में अज्ञेय ने सृजन की प्रक्रिया में 'आत्मनिवेदन' के भाव से सृजनशक्ति के आह्वान को सर्वाधिक महत्व दिया है।

2. 'ज़ेन बुद्धिज़्म' व 'शून्यवाद' का प्रभाव दिखता है।

3. अज्ञेय की काव्य भाषा में तद्भव शब्दों का विशेष महत्व है जिससे उनकी भाषा उच्चवर्ग ~~के लिए~~ व निम्नवर्ग दोनों के लिए सुग्राह्य हो जाती है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

4. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) विपन्नता के इस अथाह सागर में सोहाग ही वह तृण था, जिसे पकड़े हुए वह सागर को पार कर रही थी। इन असंगत शब्दों ने यथार्थ के निकट होने पर भी, मानों झटका देकर उसके हाथ से वह तिनके का सहारा छीन लेना चाहा, बल्कि यथार्थ के निकट होने के कारण ही उनमें इतनी वेदना-शक्ति आ गई थी। काना कहने से काने को जो दुःख होता है, वह क्या दो आँखों वाले आदमी को हो सकता है?

संदर्भ प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश समाजवादी धारा के महान रचनाकार 'प्रेमचन्द' के कीर्तिस्तम्भ 'गोदान' से उद्धृत है। यहाँ होरी की मौत की आशंका से सशंकित 'धनिया' की स्थिति का वर्णन किया गया है।

व्याख्या: धनिया के जीवन में उसका सुहाग 'होरी' ही एकमात्र सहारा था। उसी की बदौलत वह समस्त कष्टों को झेलते हुए आगे बढ़ रही थी। होरी के मजाक में भी मौत की चर्चा करने पर उसमें वेदना का भाव आ गया। प्रेमचन्द मुहावरा कहते हुए लिखते हैं कि काने का दर्द काना ही जान सकता है अर्थात् विपन्न का दर्द विपन्न ही जान सकता है।

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

विशेष : ① प्रेमचन्द की भाषा आम-बोल चाल की हिन्दुस्तानी भाषा है जो सर्वजन ग्राह्य है।

② एक ~~स्त्री~~ गृहिणी के पति पर निर्भरता के मनोविज्ञान का चित्रण किया गया है।

③ मुहावरे का प्रयोग : ~~काटे~~ काटो कहने से - - - - -

④ ~~विशेषता~~

भाषा में तत्सम एवं तद्भव शब्दावली का समावेश हेतु

5 1/2 / 10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) मगर कोठरी में बैठने की देर थी कि आँखों से छल-छल आँसू बहने लगे। वह दुपट्टे से बार-बार उन्हें पोंछती, पर वे बार-बार उमड़ आते, जैसे बरसों का बाँध तोड़कर उमड़ आये हों। माँ ने बहुतेरा दिल को समझाया, हाथ जोड़े, भगवान का नाम लिया, बेटे के चिरायु होने की प्रार्थना की, बार-बार आँखें बन्द की, मगर आँसू बरसात के पानी की तरह जैसे थमने में ही न आते थे।

संदर्भ व प्रसंग : प्रस्तुत गद्यखण्ड भीष्म साहनी की प्रसिद्ध कहानी 'चीफ की दावत' से उद्धृत है। बेटे द्वारा अपमानित हुई माँ की स्थिति का मार्मिक विवरण यहाँ किया गया है।

व्याख्या: बेटे के चीफ, व बेटे द्वारा अपमानित माँ का हृदय व्यथित हो गया। व आँसुओं का बाँध टूटपड़ा माँ का हृदय यूँ तो बेटे के चिरायु होने की कामना करता रहा, स्वयं को स्थितियों से समझौता करने का ढाढ़स बँधाता रहा परन्तु अपमान की चोट अत्यन्त गहरी होने के कारण आँसू नहीं थम रहे थे।

विशेष: 1. आधुनिकता के फेर में बुढ़ों को अप्रस्तुतियोग्य मानकर अपमानित किये जाने की स्थिति का मार्मिक वर्णन

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

3

2. मातृ-मनोविज्ञान – 'बेटे के चिरायु होने की कामना की' का सुन्दर प्रयोग

3. जनग्राह्य, साधारण खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है।

4. ऐसा ही भाव प्रेमचन्द की कहानी 'बूढ़ी काकी' में भी मिलता है।

माँ-बेटे के संबंधों पर भी उपयोगितावाद हावी

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) भविष्य की चिन्ता हमें कायर बना देती है, भूत का भार हमारी कमर तोड़ देता है। हममें जीवन की शक्ति इतनी कम है कि भूत और भविष्य में फैला देने से वह और भी क्षीण हो जाती है। हम व्यर्थ का भार अपने ऊपर लादकर रूढ़ियों और विश्वासों और इतिहासों के मलबे के नीचे दबे पड़े हैं, उठने का नाम ही नहीं लेते, वह सामर्थ्य ही नहीं रही। जो शक्ति, जो स्फूर्ति, मानव-धर्म को पूरा करने में लगनी चाहिये थी, सहयोग में, भाई-चारे में, वह पुरानी अदावतों का बदला लेने और बाप-दादों का ऋण चुकाने की भेंट हो जाती है और यह जो ईश्वर और मोक्ष का चक्कर है, इस पर तो मुझे हंसी आती है।

प्रसंग व संदर्भ : प्रस्तुत गद्यांश प्रेमचन्द के निबन्ध 'साहित्य का प्रगतिशील रूप' से उद्धृत है। यहाँ लेखक रूढ़ियों का खण्डन कर रहा है।

'गोदान' उपन्यास से उद्धृत

व्याख्या : लेखक वर्तमान समय को आनंद के साथ व्यतीत करने पर बल देते हुए कहता है कि भविष्य व भूत जीवनीशक्ति का क्षरण ही करते हैं, विस्तार नहीं। हमें व्यर्थ के अंधविश्वासों व रूढ़ियों को त्यागकर, इतिहास से ऊपर उठकर मानवता के विकास में, भाई-चारे के विकास में अपनी ऊर्जा लगानी चाहिए। लेखक ईश्वर और मोक्ष की परंपरा पर व्यंग्य करते हुए इन्हें त्यागने का आह्वान करता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष :

1. रूढ़िवादिता का खण्डन कर आधुनिकता के स्वीकार्य का भाव प्रदर्शित हुआ है।

2. इतिहास की तुलना मलबे से की गई है।

5/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) धनिया यन्त्र की भाँति उठी, आज जो सुतली बेची थी, उसके बीस आने पैसे लायी और पति के ठण्डे हाथ में रखकर सामने खड़े दातादीन से बोली-महराज! घर में न गाय है, न बछिया, न पैसा। यही पैसे हैं, यही इनका गोदान है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ व प्रसंग: प्रस्तुत गद्यखण्ड प्रेमचन्द -कृत उपन्यास 'गोदान' से उद्धृत है। यहाँ प्रेमचन्द होरी की मौत के पश्चात के दृश्य को वर्णित कर रहे हैं।

व्याख्या: धनिया गोदान की सारी माँगों व अंधविश्वासों को लात मारती हुई उठी और गुस्से में मात्र २० पे बीस पैसे होरी के मृत हाथ पर रखकर कहती है कि अंधविश्वासों से उसे कोई सरोकार नहीं। जिसे जो कहना है कहता रहे, उसके पास यही धन है, वह गोदान करने में असमर्थ है।

विशेष: 1. मृत्यु के बाद भी भारतीय रूढ़िवादी समाज में अंधविश्वास पीछा नहीं छोड़ते। यही भाव यहाँ व्यंजित हुआ है।

2. प्रेमचन्द समाज में प्रचलित रूढ़ियों व समस्याओं पर व्यंग्य करते दिख रहे हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

3. 'गोदान' की परंपरा का त्याग दिखता है। यह वही मरजाद है जिसने होरी को मौत के मुँह में ढकेल दिया।

$\frac{5\frac{1}{2}}{10}$

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) जीना चाहते हो? कठोर पाषाण को भेदकर, पाताल की छाती चीरकर अपना भोग्य संग्रह करो; वायुमंडल को चूसकर, झंझा-तूफान को रगड़कर, अपना प्राप्य वसूल लो; आकाश को चूमकर, अवकाश की लहरों में झूमकर, उल्लास खींच लो।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ व प्रसंग: प्रस्तुत गद्यांश आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी कृत ललित निबंध 'कुटज' से लिया गया है। यहाँ द्विवेदी जी कुटज के वृक्ष की अदम्य जिजीविषा के माध्यम से अपनी जीवन दृष्टि प्रस्तावित कर रहे हैं।

व्याख्या: द्विवेदी जी कहते हैं कि यदि जीने की इच्छा रखते हो, तो सारी विपरीत परिस्थितियों में भी जीवनी शक्ति ढूंढने का प्रयास करो। जैसे कुटज का वृक्ष पत्थर को भेदकर, पाताल को चीरकर, वायुमंडल से प्रत्येक परिस्थिति में अपना भोग्य संग्रह करता है, वैसा ही मनुष्य को भी करना पड़ेगा। कितनी भी कठोर परिस्थितियाँ हों, हर स्थिति में संघर्षरत रहो और जीवन में आशा, उल्लास बनाये रखो।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

विशेष : 1. 'कुरुप' के रूपक का सर्वत्र प्रयोग।

2. तत्सम प्रधान, विचार प्रधान, लालित्यपूर्ण भाषा।

3. आलोचकों ने इन पंक्तियों को द्विवेदी जी के स्वयं के संघर्ष से भी जोड़कर देखा है।

4. ~~समास~~ सामासिकता का सुन्दर प्रयोग यथा झंसा-तूफान।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फ़ेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) तो क्या ये मेरे मोटे होने के दिन हैं? मोटे वह होते हैं जिन्हें न रिन का सोच होता है न इज्जत का। इस जमाने में मोटा होना बेहयाई है। सौ को दुबला करके तब एक मोटा होता है। ऐसे मोटेपन में क्या सुख? सुख तो जब है कि सभी मोटे हों।

संदर्भ व प्रसंग: प्रस्तुत गद्यांश प्रेमचन्द कृत उपन्यास गोदान से उद्धृत है। यहाँ 'होरी' मोटापे के माध्यम से ~~शोषक~~ शोषणपरक व्यवस्था ~~का~~ का संप्रेषण कर रहा है।

व्याख्या: होरी कहता है कि वह मोटा कैसे हो सकता है। वह तो इस शोषणपरक व्यवस्था का आम किसान है जो ऋण, गरीबी आदि से ग्रस्त है। होरी - मोटापे पर व्यंग्य करते हुए कहता है कि जहाँ आम जन भूखा मर रहा हो वहाँ मोटा होना निर्लज्जता है। वही लोग सुख योग कर मोटे हो रहे हैं जो दूसरों का शोषण करते हैं। असली सुख तो तभी आएगा जब सबको समान न्याय मिलेगा, समान संसाधनों की प्राप्ति होगी।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

विशेष :

1. 'रुई को दुबला करके तब एक मोटा होता है' – सूत्र शैली का प्रयोग

2. मार्क्सवादी वितरणमूलक न्याय से प्रभावित पंक्तियाँ

3. शोषणपरक व्यवस्था पर व्यंग्यात्मक चोट की गई है।

4. भाषा लोक जीवन से जुड़ी, सरल, सुग्राह्य आम हिन्दुस्तानी है।

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) नारी के प्रति अनुराग से, उसके आश्रय की कामना से ही पुरुष उसे अधीन रख कर उसे आत्म-निर्भर नहीं रहने देता। नारी प्रकृति के विधान से नहीं, समाज के विधान से भोग्य है। प्रकृति में और समाज में भी स्त्री तथा पुरुष अन्योन्याश्रय हैं।

प्रसंग तथा संदर्भ: प्रस्तुत गद्यांश मार्क्सवादी ~~रचनाकार~~ 'यशपाल' के उपन्यास 'दिव्या' से उद्धृत है। यहाँ यशपाल मारिश के माध्यम से अपनी नारी दृष्टि प्रस्तुत कर रहे हैं।

व्याख्या: मारिश कहता है कि ~~ईश्वर के~~ प्रकृति ने नारी को पुरुष के अधीन नहीं बनाया। प्रकृति के विधान में तो नारी और पुरुष एक दूसरे के पूरक हैं, शोषणपरक, पुरुषप्रधान सामाजिक व्यवस्थाओं के कारण नारी भोग्य बने रहने को बाध्य है। पुरुष उसके आश्रय ~~के~~ की कामना से, अनुराग से उसे स्वतन्त्र नहीं होने देता।

विशेष: 1. यशपाल ने मार्क्सवादी नारी दृष्टि का प्रक्षेपण किया है जहाँ विवाह जैसी व्यवस्थाएँ ~~शोषक~~ शोषण का साधन समझी जाती हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

2. ~~इतिहास प्रध~~ ऐतिहासिक वातावरण के कारण भाषा तत्समीकृत हो गई है

3. सामाजिक शोषण व्यवस्था का उद्घाटन किया गया है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) अहंकारमूलक आत्मवाद का खण्डन करके गौतम ने विश्वात्मवाद को नष्ट नहीं किया। यदि वैसा करते तो इतनी करुणा की क्या आवश्यकता थी? उपनिषदों के नेति-नेति से ही गौतम का अनात्मवाद पूर्ण है। यह प्राचीन महर्षियों का कथित सिद्धांत, मध्यमा प्रतिपदा के नाम से, संसार में प्रचारित हुआ। व्यक्तिरूप में आत्मा के सदृश कुछ नहीं है। वह एक सुधार था, उसके लिये रक्तपात क्यों?

जयशंकर प्रसाद 'स्कंदगुप्त' नाटक

प्रसंग व संदर्भ: प्रस्तुत गद्यांश बालकृष्ण भट्ट कृत निबन्ध साहित्य जनसमूह का विकास' से उद्धृत है। यहाँ वे प्राचीन संस्कृति व उसपर बौद्ध धर्म के प्रभाव का एकपक्षीय वर्णन कर रहे हैं।

X

व्याख्या: भट्ट जी लिखते हैं कि अहंकार-मूलक आत्मवाद (आत्म संकीर्णता) का खण्डन करके बुद्ध ने विश्वबंधुत्व को नहीं नकारा था। जो बुद्ध ने कहा वह हिन्दू वैदिक व औपनिषदिक परंपरा में भी उपलब्ध है। वे बौद्ध-हिन्दू संघर्ष को व्यर्थ बताते हुए कहते हैं कि सुधार को ~~सर्वस~~ सर्वसम्मति मिलनी चाहिए।

विशेष: 1. 'सर्वधर्म समभाव' की भावना का संप्रेषण

2. तत्सम प्रधान, चिंतनप्रधान भाषा

3. सुधारों की स्वीकृति को महत्व

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दिया गया है।

4. हिन्दू व आर्य संस्कृति के प्रति मोह का भाव दिखता है।

2/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) आज तक के वे भीतरी उबाल और बाहरी दबाव के बीच टुकड़े-टुकड़े होकर हमेशा घुटने ही टेकते आये हैं। हर बार दिनेश को लड़ाई के मैदान में ले तो ज़रूर गए हैं, पर जैसे ही गोलियाँ चली हैं, उसे वहीं छोड़कर भाग आये हैं- अकेला, निहत्था। वह गोलियों की बौछार से लहूलुहान होता रहा है और ये खुद एक असह्य अपराध बोध से। नहीं, और नहीं; अब तो वे चाहें तो भी शायद ऐसा नहीं कर सकते।

प्रसंग व संदर्भ: प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी साहित्य की महिला लेखक की स्तम्भ 'मन्नू भंडारी' के राजनीतिक उपन्यास 'महाभोज' से उद्धृत है। यहाँ वे ~~क~~ मि. सक्सेना के आंतरिक द्वंद्व व व्यक्तित्व परिवर्तन का ~~का~~ उद्घाटन कर रही हैं।

व्याख्या: मि. सक्सेना सोचते हैं कि इस बार वे दबावों के आगे नहीं झुकेंगे। उन्होंने कई बार विद्रोह का भाव मन में लाया, परन्तु हर बार वे अपने मन को मसोसकर स्थितियों से समझौता करते आए हैं, और इस कारण वे एक असहनीय अपराधबोध से दबते रहे हैं। परन्तु इस बार उनका ~~[illegible]~~ निर्णय दृढ़ है। अब वे बिसू की मौत व बिन्दा पर हुए अन्याय को उजागर करके ही रहेंगे।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

विशेष : 1. ~~मध्यवर~~ मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी के 'मानसिक द्वंद्व' का मार्मिक चित्रण किया गया है।

2. राजनीति का विद्रूप स्वरूप कैसे ईमानदार व्यक्तियों पर अत्याचार करता है - इसका चित्रण

3. भाषा सर्वजन सुलभ, सुग्राह्य है। कहीं-कहीं भावानुकूल तत्सम शब्दों का प्रयोग यथा - असह्य

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) पंडित ने रस्सी निकाली। उसका फंदा बनाकर मुरदे के पैर में डाला और फंदे को खींचकर कस दिया। अभी कुछ-कुछ धुँधला-सा था। पंडित जी ने रस्सी पकड़कर लाश को घसीटना शुरू किया और गाँव के बाहर घसीट ले गए। वहाँ से आकर तुरंत स्नान किया, दुर्गापाठ पढ़ा और घर में गंगाजल छिड़का।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

संदर्भ व प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश प्रेमचन्द की दलित चेतना से ओत-प्रोत कहानी 'सद्‌गति' से उद्धृत है। यहाँ प्रेमचन्द उच्चवर्ग के ~~खोखले~~ शोषणपरक व भावशून्य चरित्र को उजागर कर रहे हैं

व्याख्या : जब कोई भी दुखी चमार की लाश उठाने नहीं आया, तो पंडित जी खुद सुबह के अँधियारे में लाश को घसीटकर गाँव के बाहर छोड़ आए। लाश को अशुद्धि का प्रतीक मानकर उन्होंने तुरन्त स्नान किया, पूजा की तथा गंगाजल से घर को शुद्ध किया।

विशेष : 1. जातिप्रथा में निहित शोषण व्यवस्था व अंधविश्वास पर चोट - जहाँ मनुष्य के जीवन का कोई मूल्य नहीं और गंगाजल को शुद्ध माना जाता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

2. प्रेमचन्द की भाषा आम हिन्दुस्तानी है।
3. व्यंग्यपूर्ण शैली का प्रयोग।

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation